कहूं केते सुख हक रसना, जैसे आप अलेखे अपार।
सो सब सुख बकामें रूहों, जाको होए न काहूं सुमार।। ६५ ।।

जैसे श्री राजजी महाराज के सुख बेशुमार हैं वैसे ही उनकी रसना के सुख बेशुमार हैं। कैसे कहे जाएं? यह सभी अखण्ड सुख रूहों को श्री राजजी महाराज परमधाम में देते हैं, जो बेशुमार हैं।

ए नेक कह्या बीच खेल के, हक रसना के गुन।
ए सब बातें मिल करसी, आगूं हक बका वतन।। ६६ ।।

श्री राजजी महाराज की रसना के थोड़े से गुण हमने खेल में बताए हैं। यह सब सुखों की बातें, अखण्ड परमधाम में जब सब मिलेंगे, श्री राजजी के सामने होंगी।

सुनो महामत रसना रस, और सुनाइयो मोमिन।
जो हुकम कहे तोहे हेत कर, हक रसना के गुन।। ६७ ।।

श्री राजजी महाराज का हुकम मुझे प्यार से रसना के गुण बतलाता है। श्री महामतिजी कहते हैं कि श्री राजजी महाराज की रसना के उन गुणों को सुनो और मोमिनों को सुनाओ।

।। प्रकरण ।। १६ ।। चौपाई ।। ८८२ ।।

हक मासूकके वस्तर

देत निमूना बीच नासूत, जानों क्योंए आवे माहें दिल।
आगूं मेला बड़ा होएसी, लेसी मोमिन ए विध मिल।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि श्री राजजी महाराज के वस्त्रों का नमूना मृत्युलोक में बैठकर बतला रही हूं, ताकि किसी तरह से रूहों के दिल में आ जाए। आगे जब सब सुन्दरसाथ इकट्ठे होंगे, तब इन सुखों को सब मोमिन मिलकर लेंगे।

एक देऊं निमूना दुनीका, जो पैदा दुनी में होत।
धागा होत है रूई का, और जवेरों जोत।। २ ।।

मैं दुनियां में जैसी चीजें पैदा होती हैं, वैसा नमूना बताती हूं। जैसे रुई का धागा और जवेरों से कपड़े बनाए जाते हैं।

धागा असल रूई तांतसा, जवेर जैसी जोत नंग।
हुकमें बनें ताके वस्तर, होए कैसा पेहेनावा अंग।। ३ ।।

रुई के पतले धागे से और नगों से जड़े जवेर की तरह परमधाम में श्री राजजी के वस्त्र आभूषण हुकम मात्र से बन जाते हैं। अब हुकम से बने वस्त्रों की शोभा कैसी होगी?

पैदा निमूना दुनी का, अर्स जिमिएं नहीं पोहोंचत।
दुनी निमूना हक को, ए कैसी निसबत।। ४ ।।

दुनियां में पैदा चीजों की उपमा परमधाम की चीजों को नहीं लगती। दुनियां की मिटने वाली चीजों की उपमा श्री राजजी महाराज के अखण्ड वस्त्रों को भला कहां दी जा सकती है?

Nijanand App

जामा कहूं मैं सूत का, के कहूं कपड़ा रेसम।
के कहूं हेम नंग जवेर का, के कहूं अव्वल पसम।।५।।

श्री राजजी महाराज का जामा सूत का बताऊं या रेशमी कपड़े का, या फिर सोने के नगों का या जवेरों का या कोमल पश्म का।

ए पांचों उत पोहोंचे नहीं, जो कर देखो सहूर।
क्यों पोहोंचे फना जड़ निमूना, ए हक बका चेतन नूर।।६।।

विचार करके देखो यह पांचों (सूत, रेशम, सोना, नग, जवाहरात) चीजें परमधाम को नहीं पहुंचती, क्योंकि यह सभी मिटने वाली और जड़ हैं। श्री राजजी महाराज के अखण्ड वस्त्र, आभूषण सब चेतन हैं और एक नूर तत्व के हैं।

जो कहूं बका जिमीय के, जवेर या वस्तर।
सो भी रूह के अंग को, सोभा कहिए क्यों कर।।७।।

अगर परमधाम की अखण्ड जमीन के जवेर या वस्त्रों की शोभा बताऊं तो यहां खेल में रूह के अंग को कैसे समझाएं?

जो चीज पैदा जिमी की, सो दूसरी कही जात।
चीज दूसरी वाहेदत में, कैसे कर समात।।८।।

दुनियां में जो चीजें पैदा होती हैं वह दूसरी कही जाती हैं, परन्तु परमधाम में जहां एकदिली है, दूसरी चीज की कैसी उपमा दें?

हक इलमें चुप कर न सकों, और सब्द में न आवे सिफत।
ताथें हुकम केहेत है, सुनो जामें की जुगत।।९।।

श्री राजजी महाराज की जागृत बुद्धि के इलम से चुप भी नहीं रह सकती और शोभा को वर्णन करने के वास्ते यहां शब्द नहीं है, इसलिए अब जामे की शोभा हुकम से कहती हूं।

पर कछुक निमूने बिना, नजरों न आवे तफावत।
तो चुप से तो कछू कह्या भला, रूह कछू पावे लज्जत।।१०।।

क्योंकि नमूना बताए बिना दोनों के फर्क का पता नहीं चलेगा, इसलिए चुप रहने से कुछ कहना अच्छा है, क्योंकि कहने से परमधाम की रूहों को कुछ तो लाभ मिलेगा।

ए दिल में ले देखिए, अर्स धागा और नंग।
जोत न माए आकास में, जो सोभें पेहेने हक अंग।।११।।

परमधाम के धागा और नग को दिल से विचार करके देखो। जो वस्त्र श्री राजजी महाराज ने अपने अंग पर पहन रखे हैं, उनके धागे और नगों की जोत आकाश में नहीं समाती है।

वस्तर नहीं जो पेहेर उतारिए, ए हक अंग नूर रोसन।
दिल चाह्या रंग जोत पोत, अर्स अंग वस्तर भूखन।।१२।।

परमधाम के वस्त्र ऐसे नहीं हैं कि इन्हें पहना जाए और उतारा जाए। यह श्री राजजी महाराज के नूरी अंग की शोभा हैं। श्री राजजी महाराज की जैसी चाहना होती है वैसे ही वस्त्र और आभूषण की शोभा बदल जाती है।

Nijanand App

ए जो कही जुगत जामे की, हक अंग का रोसन।
और भांत सुख आसिकों, पेहेने तन वस्तर भूखन।। १३ ।।

यह जो जामे की हकीकत बताई है वह श्री राजजी महाराज के अंग की ही शोभा है। आशिक रूहों को इस तन पर पहने वस्त्र आभूषण कई प्रकार के सुख देते हैं।

नीला रंग इजार का, मिहीं चूड़ी घूंटी ऊपर।
तिन पर झलके दावन, हरी झांई आवत नजर।। १४ ।।

श्री राजजी महाराज की इजार का रंग नीला (हरा) है जिसमें घूंटी के ऊपर बारीक चुन्नटें शोभा देती हैं। इजार के ऊपर सफेद जामे का घेरा झलकता है। उसमें से इजार का रंग हरा दिखाई देता है।

रंग नंग बूटी कछुए, लगत नहीं हाथ को।
ए सुख बारीक अर्स के, इन अंग का नूर अर्स मों।। १५ ।।

इस इजार और जामे के नग और बूटियां हाथ के छूने से पता नहीं चलतीं। परमधाम के यह खास सुख हैं। इन अंगों का ही नूर परमधाम में फैला है।

जोत करे दिल चाहती, जैसी नरमाई अंग चाहे।
सोभा धरे दिल चाहती, जुबां खुसबोए कही न जाए।। १६ ।।

श्री राजजी महाराज जैसा अपने अंगों में चाहते हैं, दिल के चाहे अनुसार अंग की शोभा बन जाती है। वैसी ही चाहना अनुसार उसकी किरणें फैलने लगती हैं। उनकी खुशबू तक का वर्णन यहां की जबान से करना सम्भव नहीं है।

चोली अंग को लग रही, सेत जामा अंग गौर।
चीन से कुसादी दावन, ताको क्योंकर कहूं जहूर।। १७ ।।

जामे की चोली अंग को चिपक कर लगी है (टाइट फिट है)। श्री राजजी महाराज का रंग गोरा है और सफेद जामे में से झलकता है। चोली से नीचे घेरे में खुली चुन्नटें हैं। उनकी शोभा का कैसे वर्णन करूं?

पेहेनावा अर्स अजीम का, क्यों कहिए माहें सुपन।
कंकरी एक अर्स की, उड़ावे चौदे भवन।। १८ ।।

परमधाम के पहनावे का वर्णन संसार में कैसे कहें। परमधाम की एक कंकरी के सामने चौदह लोकों का ब्रह्माण्ड उड़ जाता है।

वस्तरों में कई रंग हैं, सो हाथ को लगत नाहें।
और भी हाथ लगें नहीं, जो जवेर वस्तरों माहें।। १९ ।।

परमधाम के वस्त्रों में कई नग और रंग हैं जो हाथ को नहीं लगते। वस्त्रों में जो जवेर जड़े हैं वह भी हाथ के छूने पर लगते नहीं है। वह वस्त्रों के ही रूप हैं।

रंग रेसम जवेर जो देखत, सो सब मसाला नंग।
वस्तर भूखन सब नंगों के, माहें अनेक देखावें रंग।। २० ।।

रंग, रेशम, जवेर और नग जो वस्त्र आभूषण में दिखाई देते हैं, उनमें अनेक तरह के रंगों की तरंगें दिखाई देती हैं।

Nijanand App

कई बेली किनार में, और कई विध बेली चींन।
बीच बूटी छापे कई नकस, इन जल की जाने जल मीन।। २१ ।।

जामे के किनारे पर कई तरह की बेलियां बनी हैं और कई तरह की बेलें चुन्नटों पर बनी हैं, जिनमें कई तरह की बूटियां, छापे और नक्शकारी है। इस सुख को परमधाम की रूहें ही जानती हैं।

रंग कंचन कमर कस्या, पटुका जो पूरन।
केते रंग इनमें कहूं, जानों एही सबे भूखन।। २२ ।।

श्री राजजी महाराज की कमर में जो पटका बंधा है, उसका रंग सोने जैसा है। उसमें कितने रंगों का वर्णन करूं? लगता है यह सभी आभूषण पहने है।

सो रंग सारे जवेरन के, कई रंग छेड़े किनार।
हर धागे रंग कई विध, नहीं रंग जोत सुमार।। २३ ।।

पटके के किनारे पर जवेरों के रंग हैं। हर धागे में कई तरह के रंग हैं और उन रंगों का तेज बेशुमार है।

दोऊ बगलों केवड़े, किन विध कहूं रोसन।
कई रंग नंग माहें झलकत, जामा क्यों कहूं अर्स तन।। २४ ।।

जामे की दोनों बगलों में केवड़े जैसे फूल बने हैं। उनकी शोभा का कैसे वर्णन करूं? उन केवड़े के फूलों में कई तरह के रंग और नगों की झाईं झलकती है। ऐसे परमधाम के तन के ऊपर पहने जामे की शोभा का वर्णन कैसे करूं?

ए सोभा देख सुख उपजे, हक वस्तर या भूखन।
और इनकी मैं क्यों कहूं, जो रेहेत ऊपर इन तन।। २५ ।।

श्री राजजी महाराज के वस्त्रों या आभूषणों को देखकर बेहद सुख पल-पल होता है और जो श्री राजजी महाराज के तन के ऊपर दिखाई देते हैं उनकी शोभा का वर्णन कैसे करूं?

गिरवान दोऊ देखत, अति सुन्दर अनूपम।
मुख आगे मासूक के, निरखत अंग आतम।। २६ ।।

जामे के दोनों बंध बड़े सुन्दर दिखाई देते हैं। जो बंध श्री राजजी महाराज के मुख के आगे छाती पर हैं उन्हें देखकर आत्मा तृप्त होती है।

बातें करें सलोनियां, मासूक सलोंने मुख।
नैन सलोंने रस भरे, कई देत आसिकों सुख।। २७ ।।

श्री राजजी महाराज बड़े सलोने मुख से बड़ी रस भरी बातें करते हैं। उनके नैन बड़े सुन्दर मस्ती से भरे आशिक रूहों को सुख देते हैं।

दोऊ बेल दोऊ बगलों पर, जानों कुन्दन नंग जड़तर।
नीले पीले लाल जवेर, सुख पाऊं देत नजर।। २८ ।।

दोनों बगलों के ऊपर दो सुन्दर बेलें ऐसे दिखाई देती हैं जैसे सोने में नग जड़े हों। नीले, पीले और लाल जवेरों को देखकर मैं बहुत प्रसन्न होती हूं।

Nijanand App

दोऊ बांहें चूड़ी अति सुन्दर, मिहीं मिहीं से लग मोहोरी।
कई रंग नंग चूड़ियों, जवेर जवेर बीच जरी।। २९ ।।

जामे की दोनों बाहों में बारीक से बारीक अति सुन्दर चुन्नटें किनारे तक दिखाई देती हैं। इन चुन्नटों के बीच-बीच में कई तरह के नगों और रंगों की जरी जड़ी है।

मोहोरी जड़ाव फूल बने, जानों के एही नंग भूखन।
बेल जामें जो जुगतें, सबथें सोभा अति घन।। ३० ।।

मोहरी के ऊपर जवेरों के सुन्दर फूल बने हैं, लगता है वही नग आभूषणों के हैं। जामे की बेल की जुगत सबसे अधिक शोभायमान है।

किन विध जामा लग रह्या, ए जो अंग का जहूर।
कई नकस बूटी मिहीं बेलियां, रूह कर देखे अर्स सहूर।। ३१ ।।

श्री राजजी महाराज का जामा इस तरह तन पर फिट बैठा है कि वह श्री राजजी महाराज के तन की शोभा है। जिसमें कई तरह की नक्शकारी, बूटियां और बारीक बेले हैं, जिन्हें परमधाम की रूहें विचार करके देखती हैं।

पार न जामें सलूकी, ना कछू नरमाई पार।
इन मुख गुन केते कहूं, खूबी तेज न सुगंध सुमार।। ३२ ।।

जामे की सुन्दर बनावट और नरमाई बेशुमार है। उसकी खूबी, सुगंधि और तेज बेशुमार है। यहां के मुख से उस जामे के गुणों का कैसे बयान करूं?

इन ऊपर जो भूखन, नेक इनकी कहूं विगत।
क्यों नूर कहूं अर्स अंग का, पर तो भी कहूं नेक मत।। ३३ ।।

इस जामे के ऊपर जो आभूषण हैं, उनकी थोड़ी सी हकीकत बताती हूं। श्री राजजी महाराज के अंग के नूर की शोभा कैसे कहूं, परन्तु फिर भी अपनी बुद्धि से थोड़ा-सा वर्णन करती हूं।

धागे बराबर नकस, झीने बारीक अतंत।
ए फूल बेल तो आवें नजरों, जो अंग अंग खुलें वाहेदत।। ३४ ।।

धागे के बराबर पतली बारीक नक्शकारी है। यह फूल और बेल तब दिखाई पड़ें जब श्री राजजी महाराज के अंग की शोभा अलग दिखाई पड़े।

ए नकस सो जानहीं, नैनों देखें जो होए निसबत।
ए देखें याद आवहीं, पेहेले बातें हुई खिलवत।। ३५ ।।

इन नक्शकारियों को वही जानते हैं, जिन मोमिनों ने श्री राजजी महाराज को नैनों से देखा है। यह देखने के बाद ही मूल-मिलावे की बातें याद आती हैं।

हक पाग जो निरखते, होए अचरज माहें सहूर।
ए याद किए क्यों जीव ना उड़े, देख नूरजमाल मुख नूर।। ३६ ।।

श्री राजजी महाराज की पाग हम जब देखते हैं तो विचार करने से बड़ी हैरानी होती है। ऐसे श्री राजजी महाराज के मुख के नूर को देखकर तथा खिलवत की बातें यादकर यह जीव क्यों नहीं उड़ जाता?

Nijanand App

हुकमें पाव पल में, पाग कई कोट होत।
रंग नंग फूल कई नकस, दिल चाही धरे जोत।। ३७ ।।

श्री राजजी महाराज के एक चौथाई पलक में करोड़ों तरह की पाग बन जाती हैं। इस तरह से कई तरह के नग, रंग, फूल और नक्शकारी दिल की चाहना अनुसार शोभा देने लगती है।

हक पाग बनावें हाथ अपने, अर्स खावंद दिल दे।
ए देखें रूह सुख पावत, जब हाथ गौर पेच ले।। ३८ ।।

श्री राजजी महाराज अपने हाथ से दिल की चाहना के अनुसार पाग बांधते हैं। जब अपने गोरे हाथों से पाग के लपेट लगाते हैं, तो उसे देखकर रूह को बहुत सुख होता है।

आसिक चाहे मैं देखों, हक यों पेच लेत हाथ माहें।
कई विध फेरें पेच को, कोई इन सुख निमूना नाहें।। ३९ ।।

आशिक रूह चाहती है कि श्री राजजी महाराज कैसे अपने हाथ से पाग की लपेट लगाते हैं, उसे मैं देखूं। यह कई तरह से पाग के लपेटों को फेरते हैं, जिस सुख का बयान करने के लिए कोई नमूना नहीं है।

जो रंग चाहिए जिन मिसलें, सो नंग धरत तित जोत।
फूल नकस कटाव कई, ए कछू अचरज पाग उद्दोत।। ४० ।।

जो रंग जिस तरह का जहां चाहिए, उसी तरह के नग की जोत वहां दिखाई देने लगती है। कई तरह के फूल, नक्शकारी और कटाव से पाग में बड़ी विचित्र शोभा लगती है।

मध्य चौक जित चाहिए, ऊपर चाहिए चौकड़ी जित।
बेल पात सब रंग नंग, सोई बनी पाग जुगत।। ४१ ।।

पाग के अन्दर जहां चौक और चौकड़ी चाहिए, वहां वैसी ही शोभा दिखाई देती है। उनमें बेल, पत्ते सब तरह के नगों के रंगों की शोभा बड़ी युक्ति से पाग में बनी दिखाई देती है।

ताथें हक लेत पेच हाथ में, कोमल अंगुरियों।
गौर अंगुरियां पतली, मीठा सोभें मुंदरियों।। ४२ ।।

इस तरह से श्री राजजी महाराज अपनी कोमल उंगलियों से जब पाग के लपेट देते हैं, तो उन गोरी पतली उंगलियों में सुन्दर मुंदरी (वीटी) झलकती है।

पोहोंचे देखूं के अंगुरी, नरमाई देखूं के गौर।
मुंदरी देखूं के हथेलियां, लीकें देखूं के नख नूर।। ४३ ।।

पाग बांधते समय मैं पोहोंचे को देखूं या उंगली की नरमाई या गोरे रंग को देखूं? मुंदरी देखूं या हाथ की हथेलियों की बारीक रेखाओं को देखूं या नख के नूर को देखूं?

चलवन करते हाथ की, नैनों देखत सब सलूक।
यों देखत मासूक को, अजूं होत न आसिक टूक।। ४४ ।।

जब श्री राजजी महाराज हाथ चलाते हैं तो नैनों से सब सलूकी नजर आती है। इस तरह से श्री राजजी महाराज की शोभा को देखकर आशिक रूहों के अंग क्यों टुकड़े-टुकड़े नहीं होते?

Nijanand App

महामत निमूना ख्वाब का, क्यों दीजे हक वस्तर।
हक नूर न आवे सब्द में, पर रह्या न जाए क्योंए कर।। ४५ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि श्री राजजी महाराज के वस्त्रों की उपमा संसार में कैसे दी जाए? श्री राजजी महाराज के नूर का वर्णन शब्दातीत है, पर बिना वर्णन किए भी कैसे रहें।

।। प्रकरण ।। १७ ।। चौपाई ।। ९२७ ।।

हक मेहेबूब के भूखन

भूखन सब्दातीत के, क्यों इत बरनन होए।
सोभा अर्स सरूप की, इत कबहूं न बोल्या कोए।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि श्री राजजी महाराज के आभूषणों का वर्णन शब्दातीत है। उनकी शोभा का वर्णन यहां कैसे करूं? परमधाम के पारब्रह्म के स्वरूप की शोभा का वर्णन यहां आज दिन तक किसी ने नहीं किया।

तो क्यों माने बीच दुनियां, ए जो हक जात भूखन।
रैन अंधेरी क्यों रहे, जब जाहेर हुआ बका दिन।। २ ।।

दुनियां वाले श्री राजजी महाराज के आभूषणों की हकीकत को क्यों मानते? अब श्री राजजी महाराज की जागृत बुद्धि की तारतम वाणी से अज्ञान की अंधेरी रात मिटकर अखण्ड परमधाम के ज्ञान का सूर्य उदय हो गया है।

अनेक गुन नंग इनमें, रूह दिल चाह्या जब।
जिन जैसा दिल उपजे, सो होत आगूं से सब।। ३ ।।

परमधाम के नगों में अनेक तरह के गुण हैं। जिस समय जिसके दिल में जैसी इच्छा होती है, यह पहले से ही रूप बदले नजर आते हैं।

जेती अरवाहें अर्स में, ताए मन चाह्या सब होए।
दिल चितवन भी पीछे करे, आगे बनि आवे सोए।। ४ ।।

परमधाम की जितनी रूहें हैं, उनकी सब इच्छाएं मन के चाहे अनुसार पूरी हो जाती हैं। दिल में इच्छा पीछे होती है, काम पहले हो जाता है।

जैसा मीठा लगे मन को, भूखन तैसा ही बोलत।
गरम ठंढा सब अंग को, चित्त चाह्या लगत।। ५ ।।

मन को जैसा अच्छा लगता है, आभूषण वैसे ही स्वरों से बोलते हैं। अंग को गर्म और ठंडा चित्त के चाहे अनुसार लगते हैं।

हक बरनन करत हों, कहूं नया किया सिनगार।
ए सब्द पोहोंचे नहीं, आवत न माहें सुमार।। ६ ।।

श्री राजजी महाराज के स्वरूप का वर्णन करती हूं तो कहना पड़ता है, सिनगार नया है। उस नए सिनगार को वर्णन करने के लिए यहां के शब्द नहीं पहुंचते, क्योंकि उसकी भी शोभा बेशुमार है।

Nijanand App